2015

Aarhat Multidisciplinary International Research Journal (AMIERJ)

ISSN 2278-5655

(Bi-Monthly)

Peer-Reviewed Journal

Impact factor: 0.948

Chief-Editor

Ubale Amol Baban

[Editorial/Head Office: 108, Gokuldham Society, Dr.Ambedkar chowk, Near TV Towar,Badlapur, MSief

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ) (Bi-Monthly)
Peer-Reviewed Journal Vol No IV Issues IV
June-July- 2015 ISSN 2278-5655

बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं के तनाव एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

Education subject

शिशुपाल सिंह
प्रवक्ता बी.एड. विभाग,
डा. जी.पी.आर.डी.पटेल महाविद्यालय अरौल कानपुर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु कानपुर महानगर के बी.एड. प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं को जनसंख्या के रुप में सम्मिलित किया गया है। इस अध्ययन में सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर एवं तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु सर्वेक्षण विधि एवं टी–परीक्षण ;ज.जमेजद्ध का प्रयोग किया गया है । साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन ;ैपउचसम त्ंदकवउ ैउचसमद्ध विधि का उपयोग करके अध्ययन से सम्बन्धित जनसंख्या में से न्यादर्श का चयन किया । अध्ययन के निष्कर्ष – 1. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है। 2.बी. एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है। 3.बी. एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के तनाव में सार्थक अन्तर है। 4.बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर है।

1.1 प्रस्तावना –

संसार का प्रत्येक व्यक्ति सफलता के शिखर पर बैठना चाहता है किन्तु जब वह अपनी वास्तविक कार्यदाक्षता, योग्यता का परीक्षण किये बगैर ही लक्ष्य का निर्धारण करता है, तो उसकी आकांक्षा और लक्ष्य

के मध्य अन्तर अधिक होता, इसे ही अवास्तविक आकांक्षा स्तर कहा जाता है जो व्यक्ति की क्षमता से बहुत ऊपर होता है अर्थात् वह व्यक्ति की योग्यता व क्षमता पर कम आधारित होता है बल्कि कल्पना पर अधिक आधारित होता है। जब कोई व्यक्ति कल्पना द्वारा लक्ष्यो का निर्माण करता है। तो उसे महात्वाकांक्षी व्यक्ति कहा जाता है। जब वह व्यक्ति लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाता है तो उसमें समायोजन की क्षमता कमजोर पड़ जाती है। और मानसिक स्तर पर टूटने लगता जिसके परिणामस्वरुप उसमें तनाव पैदा हो जाता है। आज के आधुनिक समाज की यह एक गम्भीर समस्या है, तनाव का कारण चाहे जो भी हों, यह व्यक्ति के सांवेगिक एवं दैहिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। आधुनिक मनौवैज्ञानिक शोधों के परिणामों के अध्ययन से पता चलता कि करीब 75% रोगो का कारण केवल तनाव है यहाँ तक हृदय रोग एवं कैंसर जैसे जानलेवा रोग में भी तनाव की भूमिका स्थापित हो चुकी है।

मनौवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अनुसंधानों के अध्ययनों में पाया गया कि बी.एड. स्तर के छात्रों में तानव अधिक पाया गया क्योंकि स्नातक स्तर से आते–2 छात्रों के कन्धों पर जिम्मेदारी का बोझ बढ़ने लगता है और वह अपनी सफलता और असफलता में स्वयं को जिम्मेदार ठहराते है। तनाव और आकांक्षा को पैदा करने में परिवार की सामाजिक, निम्न आर्थिक स्थिति की भूमिका भी महत्वपूर्ण कारक है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता और महत्व –

बी.एड. कक्षा के छात्राध्यापक–छात्राध्यापिकायें भावी शिक्षक होते हैं, जो छात्र एवं छात्राओं के भविष्य को संवारते हैं, और उनकी क्षमताओं का आकंलन कर उन्हें समुचित आकार देते हैं। ऐसे में यह आवश्यक है, कि हमारे भावी शिक्षक तनाव से मुक्त हों, अपनी आकांक्षाओं के अनुरुप व्यवसायिक उत्तरदायित्व कुशलतापूर्वक निभा सके। भारत के संविधान में सभी नागरिकों को समानता के अधिकार का प्रावधान किया गया है, वर्ण, रंग अथवा जाति के आधार पर किसी भी प्रकार के भेद भाव का पूर्णता निषेध है। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई, कि स्वतंत्रता के 64 वर्षों के बाद क्या सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर एवं तनाव में अन्तर है ? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिये शोधकर्ता ने प्रस्तुत समस्या को अपने लघु शोध के लिये चयन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें –

H_1 बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।

H_{01} बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापको के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_2 बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।

H_{02} बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_3 बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के तनाव में सार्थक अन्तर है।

H_{03} बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_4 बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर है।

H_{04} बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.7 अध्ययन की परिसीमाएं –

शोधकर्ता ने अपनी समस्या को अग्रलिखित रुप में सीमांकित किया है –

1. अध्ययन सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध में आकांक्षा स्तर एवं तनाव के अतिरिक्त अन्य किसी चर का अध्ययन नहीं किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन का न्यादर्श केवल बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं तक सीमित है।

3.1 अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर एवं तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

3.2 जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु कानपुर महानगर के बी.एड. प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं को जनसंख्या के रुप में सम्मिलित किया गया है।

3.4 अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध कार्य में शोधकर्ता ने साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन (Simple Random Sample) विधि का उपयोग करके अध्ययन से सम्बन्धित जनसंख्या में से न्यादर्श का चयन किया शोधकर्ता ने सम्बन्धित जनसंख्या से प्रतिदर्श का चुनाव करने हेतु सर्वप्रथम अनुदानित बी.एड. कालेज की सूची प्राप्त

की, तत्पश्चात जनसंख्या की समस्त ईकाइयों के नाम लिखकर अलग–अलग डिब्बे में (महिला और पुरुष) बन्दकर उसे घुमाकर आवश्यकतानुसार पर्चियों को निकाला और उन्हें न्यादर्श के रुप में सम्मिलित कर लिया।

3.7 प्रयुक्त उपकरण –

यह परीक्षण डा0 डी0पी0 शर्मा एवं कुमारी अनुराध गुप्ता द्वारा 1981 में निर्मित किया गया, इसके द्वारा किसी भी छात्र के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक अभिवृत्ति को आसानी से मापा जा सकता है।

3.16 प्रयुक्त सांख्किीय प्रविधियाँ –

प्रदत्तों के संकलन व मूल्यांकन के पश्चात अगला पद उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्रदत्तों का विश्लेषण करना होता है। इस अध्ययन में सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर एवं तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु टी–परीक्षण (t-test) का प्रयोग किया गया है

4.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण :

तालिका – 4.1

सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापको के आकांक्षा स्तर सम्बन्धी प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन, t का मान या (C.R.)

क्रमांक	समूह	(N)	(M)	(S.D.)	(C.R.)	(df)	सार्थकता स्तर (Sig-level)
1.	सामान्य जाति के छात्राध्यापकों का आकांक्षा स्तर	50	25.28	5.45	2.45	98	0.5 स्तर पर सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत
2.	अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों का आकांक्षा स्तर	50	23.68	5.12			

उपर्युक्त सारणी संख्या 4.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि C.R. का मान 2.45 प्राप्त हुआ जो कि न्यूनतम t मान 1.96 से अधिक है, इसलिए यह .05 स्तर पर सार्थक है।

तालिका – 4.2.

सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर सम्बन्धी प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन, t का मान या (C.R.)

क्रमांक	समूह	(N)	(M)	(S.D.)	(C.R.)	(df)	सार्थकता स्तर (Sig-level)
1.	सामान्य जाति की छात्राध्यापिकाओं का आकांक्षा स्तर	50	25.82	4.54	3.2	98	.01 स्तर पर सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत
2.	अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं का आकांक्षा स्तर	50	22.81	4.98			

उपर्युक्त सारणी संख्या 4.2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि C.R. का मान 3.2 प्राप्त हुआ जो कि न्यूनतम T मान 2.58 से अधिक है, इसलिए .01 स्तर पर सार्थक है।

तालिका – 4.3

सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के तनाव सम्बन्धी प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन, t का मान या (C.R.)

क्रमांक	समूह	(N)	(M)	(S.D.)	(C.R.)	(df)	सार्थकता स्तर (Sig-level)
1.	सामान्य जाति के छात्राध्यापकों का तनाव	50	60.3	9.95	2.03	98	.05 स्तर पर सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत
2.	अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों का तनाव	50	64.3	9.97			

उपर्युक्त प्राप्त 2.03 C.R. का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम t मान 1.96 से अधिक है, इसलिए .05 स्तर पर सार्थक है।

तालिका – 4.4

सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के तनाव सम्बन्धी प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन, t का मान या (C.R.)

क्रमांक	समूह	(N)	(M)	(S.D.)	(C.R.)	(df)	सार्थकता स्तर (Sig-level)
1.	सामान्य जाति की छात्राध्यापिकओं का तनाव	50	59.9	10	2.04	98	.05 स्तर पर सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत
2.	अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं का तनाव	50	63.9	9.7			

उपर्युक्त प्राप्त 2.04 C.R. का मान .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम T मान 1.96 से अधिक है, इसलिए .05 स्तर पर सार्थक है।

5.1 निष्कर्ष –

1. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।
2. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।
3. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों के तनाव में सार्थक अन्तर है।
4. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत सामान्य जाति व अनुसूचित जाति की छात्राध्यापिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर है।

5.3 शैक्षिक निहितार्थ –

1. प्रशिक्षण विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों के शिक्षकों को छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं से नियमित रुप से बैठक कर उनके लिए अनुकूल वातावरण बनाने तथा समय–समय प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं शिक्षकों अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओ लिए रहने, खाने की उचित व्यवस्था करनी चाहिए यदि कोई छात्राध्यापिका एवं छात्राध्यापक आर्थिक स्थिति से तंग है। तो विभिन्न योजनाओं के द्वारा उसकी आर्थिक मदत करनी चाहिए जैसे शुल्क प्रतिपूर्ति सरकारी योजना है।
3. निर्देशन एवं परामर्श की विशेष सुविधा होनी चाहिए छात्राध्यापको के बीमार होने पर मेडिकल सुविधा होनी चाहिए और मानसिक स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए मनोचिकित्सक की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।
4. अनुसूचित जाति के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की सम्पूर्ण जानकारी उस वर्ग को उपलब्ध कराना और प्रशिक्षण महाविद्यालय में इस सन्दर्भ में सजगता से सम्बन्धित कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए, छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के सम्पूर्ण विकास के लिए सेमीनार कार्यशाला, गोष्ठियों का आयोजन करना चाहिए।

5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव –

कोई भी अनुसन्धान कार्य स्वयं में सम्पूर्ण एवं अन्तिम नहीं होता है। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान अनुसन्धानकर्ता ने यह अनुभव किया कि प्रस्तुत समस्या के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करने की आवश्यकता है। जो भावी शोधकर्ताओं हेतु सुझाव के रुप में दिया जा रहा है।

सन्दर्भग्रन्थ

1. **प्रकाश, ओम. (1997).** प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली ; विश्वप्रकाशन (न्यू एज इण्टरनेशनल प्रा0 लिमिटेड).
2. **अदाबाल, सुबोध. एवं अग्रवाल, कन्हैयालाल. (1978).** शिक्षा सिद्धान्त. नईदिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास; दि मैक मिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड. विश्व में सहयोगी कम्पनियां.

3. **अम्बेडर, बी. आर. (1975).** अछूत कौन और कैसे. लखनऊ; बहुजन कल्याण प्रकाशन.
4. **अम्बेडर, बी. आर. (1975).** कांग्रेस एवं गांधी ने अछूतों के लियेक्याकिया. लखनऊ ; बहुजन कल्याण प्रकाशन.
5. **एम, के. गांधी. (2009).** सत्य के साथ मेरा प्रयोग. नईदिल्ली ; नेशनल बुक ट्रस्ट.
6. **कौल, लोकेश. (2009).** शैक्षिक अनुसन्धान की कार्य प्रणाली विकास. नई दिल्ली ; पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0.
7. **किरण, चाँद. (2006).** शिक्षा दार्शनिक परिप्रेक्ष्य हिन्दी माध्यम कार्यान्वय. दिल्ली ; निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय.
8. **कोली, लक्ष्मी. नारायण. शर्मा वी. के. (2004).** ज्ञान जगत संरचना एवं विकास तथा रिसर्च मैथडोलॉजी. आगरा ; वाई.के. पब्लिशर्स, संजय.
9. **गुप्ता, एस.पी. (2011).** अनुसन्धान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहाबाद ; शारदा पुस्तक भवन यूनिवर्सिटी रोड़.
10. **मिश्र, डा0 अर्जुन. (1994).** दर्शन की मूल धारा. भोपाल ; मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ.
11. **शुक्ला, आराधना. (2008).** व्यक्तित्व सम्प्रत्यय निर्धारक एवं सिद्धान्त.नई दिल्ली ; राधापब्लि केशन्स.
12. **सिंह, अरूण कुमार. (2003).** उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान. दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर, बनारस, पुणे, पटना ; मोतीलाल बनारसीदास.
13. **शर्मा, गणपतराम. व्यास, हरिश्चन्द्र. (2010).** अधिगम शिक्षण और विकास के मनो सामाजिक आधार. जयपुर ; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
14. **जादा, राम. सिंह, विपिन. वर्मा, वन्दना. (2008).** शिक्षा में अनुसन्धान के आवश्यक तत्व. जयपुर ; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
15. **भटनागर, आर. पी. डा0. (2010).** शिक्षा अनुसन्धान. मेरठ ; लायक बुक डिपो.
16. **शर्मा, प्रकाश. वीरेन्द्र. (2010).** रिसर्च मेथडॉलॉजी. जयपुर ; पंच शक्ति प्रकाशन.

17. सुखिया, एस.पी. मेहरोत्रा, पी.वी. मेहरोत्रा, आर.एन. (1970). शैक्षिक अनुसन्धान के मूलतत्व आगरा ; विनोद पुस्तक मन्दिर.

18. पाण्डेय, के.पी. डा0. (1998). शैक्षिक अनुसन्धान. वाराणसी ; विश्वविद्यालय प्रकाशन.

19. राय, पारसनाथ (2001). अनुसन्धान परिचय. आगरा ; लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.

20. सिंह, कुमार अरूण. (2005). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधिया. दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, बंगलौर, पुणे, पटना ; मोतीलाल बनारसीदास.

21. जैन, कुमार महेश. डा0. (2007). शोध विधिया. नई दिल्ली ; यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन.

22. जरारे, वी. एल. (2003). रिसर्च मैथडोलॉजी. जयपुर (भारत) ; ए. बी. डी. पब्लिशर्स.

23. मुन्जाल, एस. (2001). रिसर्च मैथडोलॉजी. जयपुर ; राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर.

24. बिसा, रिया. पुनीत. (2007). शोध कैसेकरे ?. लि0, नईदिल्ली ; एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स (प्रा0).

25. वोहरा, वंदना. (200). रिसर्च मैथडोलॉजी. ओमेगा नई दिल्ली ; पब्लिकेशन्स.

26. पाण्डेय, ऋषिकान्त. दार्शनिक विमर्श, इलाहाबाद ; श्री भुवनेश्वरी विद्या प्रतिष्ठान.

27. सक्सेना, प्रवेश (2005). भारतीय दर्शनों में क्या है दिल्ली ; पुस्तकमहल.

28. सिंह, जे. पी. (2008). समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धान्त. नई दिल्ली ; पी.एच.डीलर्निंग प्राइवेट लिमिटेड,

29. शर्मा, रामनाथ. (2007). सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसन्धान की विधियां और प्रविधिया. नई दिल्ली; एटलांटिकपब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स,

30. शुक्ल, परशुराम (2005). भारत में सामाजिक स्तरीकरण जयपुर राजस्थान ; पोइन्टरपब्लिशर्स.

31. श्रीवास्तव, आर. एन. सिन्हा, कुमार. आनन्द. (2008). सामाजिक अनुसन्धान. इलाहाबाद ; शेखरप्रकाशन.

32. श्रीवास्तव, के.सी.(2001-02). प्राचीनभारतकाइतिहासतथासंस्कृति यूनाइटेडबुकडिपो, इलाहाबाद।